ग्रन्थमाला 'धर्म' : खण्ड २

धर्मका आचरण एवं रक्षण

भूमिका

'समाजव्यवस्था उत्तम रखना, प्रत्येक प्राणिमात्रकी ऐहिक और पारलौकिक उन्नति होना, ये बातें जिससे साध्य होती हैं, वह धर्म है', ऐसी धर्मकी व्याख्या आदि शंकराचार्यजीने की है । धर्म केवल समझनेका विषय नहीं है, अपितु आचरणमें लानेका विषय है; क्योंकि धर्मके आचरणसे ही धर्मकी अनुभूति होती है । इसलिए प्रस्तुत ग्रन्थमें धर्माचरणका महत्त्व दिया है ।

'जब-जब धर्मग्लानि होती है, तब-तब मैं धर्मसंस्थापनाके लिए अवतार लेता हूं', भगवानके इस वचनके अनुसार भगवान धर्मसंस्थापना करेंगे ही; परंतु जब भगवानने गोवर्धन पर्वत उठाया, उस समय गोप-गोपियोंने उस पर्वतको अपनी-अपनी लाठियां लगाई । उसी प्रकार धर्मरक्षाके कार्यमें योगदान देना, कालानुसार आवश्यक धर्मपालन ही है ! आज देवताओंका अनादर, धर्म-परिवर्तन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसे समाज, राष्ट्र एवं धर्म पर आए सभी संकटोंका एकमात्र स्थायी समाधान है रामराज्यकी भांति धर्मराज्यकी स्थापना करना ! धर्मराज्यका अर्थ है धर्मके अधिष्ठानपर स्थापित होनेवाला 'हिन्दू राष्ट्र'। धर्मरक्षा और धर्मराज्य की स्थापनाके विषयमें सुबोध मार्गदर्शन इस ग्रन्थमें किया है ।

'यह ग्रन्थ पढकर प्रत्येकके मनमें धर्मके प्रति प्रेम, श्रद्धा एवं गौरव निर्माण होकर धर्मरक्षाके कार्यमें वह सहभागी हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! - **संकलनकर्ता**

स्नानसे लेकर सांझतकके आचारोंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

- स्नान करते समय पीढेपर पालथी मारकर क्यों बैठें ?
- स्नानके समय श्लोकपाठ / नामजप क्यों करें ?
- उकडूं बैठकर कपडे क्यों न धोएं ?
- संध्यासमय घरमें दीप जलानेका शास्त्र क्या है ?

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।]

१. धर्माचरण ११

* धर्माचरणका अर्थ क्या है ? ११

* धर्माचरण न होना – क्षम्य तथा अक्षम्य १३

* धर्माचरणके अभावका दुष्परिणाम १४

* धर्मका अर्थ समझकर किया गया धर्माचरण ही खरा धर्माचरण १५

२. धर्माचरणका परिवर्तित होता रूप १५

३. धर्मके स्वरूपको कौन समझ सकता है ? १६

४. धर्मका भविष्य **५. धर्म एवं भारतका महत्त्व** १७

६. धर्म एवं संस्कृति **७. धर्म तथा नीति** २१

८. विभिन्न पन्थ एवं धर्म २८

* विभिन्न पन्थ, धर्म एवं नीति ३४

* विभिन्न पन्थ, पन्थोंके बीच द्वेष एवं हिन्दू धर्मका महत्त्व ३४

* हिन्दू धर्ममें राजकीय-धार्मिक सत्ताओं के केंद्रीकरणका अभाव ३५

९. धर्मग्लानि एवं अवतार ३६

९ अ. धर्मग्लानिका कारण ३६

९ आ. ईश्वरद्वारा अवतार धारण किए जानेका कारण ३७

९ इ. धर्म सुधारनेका खरा अर्थ है 'धर्मसंस्थापना' ३८

१०. भारतकी अवनतिके विविध कारण ३८

११. हिन्दू धर्मकी रक्षा करना, प्रत्येक व्यक्तिका प्रथम कर्तव्य है ! ४१

१२. धर्मराज्य (हिन्दू राष्ट्र)की स्थापना करना, हमारा धर्मकर्तव्य ! ४४

धर्मतेज जागृत करनेवाले 'हिन्दू जनजागृति समिति' समर्थित ग्रन्थ !

卐 धर्म-परिवर्तनके दांवपेचोंसे सावधान !

卐 धर्मान्तरण एवं धर्मान्तरितोंका शुद्धिकरण